प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन :-

हिंदी साहित्य जगत में अनेक विधाओं को लेकर रचनाएँ लिखी गयी है। कहानी, नाटक, निबंध, एकांकी, उपन्यास आदि गद्य की प्रमुख विधाएँ मानी जाती है। हिंदी साहित्य के प्रति मेरा आकर्षण तब बढ़ा जब मैं स्नातकोत्तर के प्रथम वर्ष में पढ़ रही थी। यह रूचि बढ़ने का कारण डॉ. शिवाजीराव निकम इनका अध्यापन करने का ढंग मुझे बहुत अच्छा लगा था। डॉ. निकम जी सद्गुरू गाडगे महाराज महाविद्यालय में उसी वक्त आये थे जब हमने स्नातकोत्तर उपाधि के लिए प्रवेश लिया। उनका तबादला उसी वर्ष (2004) में हुआ था। इन्होंने ही मेरी पढाई का रूख मोड लिया। इनके अलावा प्रा. दिलीपकुमार कसबे जी, प्रा. राजेंद्र इंगोले जी इनका भी बडा दायित्व रहा है।

एम्. फिल. की प्रवेश परीक्षा के बाद मेरा प्रवेश लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय में हुआ। वहाँ की मुझे कोई भी जानकारी नहीं थी। तब मुझे डॉ. निकम जी से वहाँ की जानकारी हासिल हुई। प्रवेश के बाद लघु शोध-प्रबंध को लेकर और मार्गदर्शक के चुनने के सवालों ने मुझे बहुत बेचैन किया। तब मुझे डॉ. निकम जी ने छ. शिवाजी कॉलेज सातारा के प्रा. डॉ. मोहन पुंडलिक जाधव जी को मिलने का सुझाव किया। उन्हें मैं पहली बार मिली। तब उन्होंने मुझे अलका सरावगी के दो उपन्यास पढने दे दिए - 'शेष कादम्बरी' और 'कोई बात नहीं'। इन उपन्यासों को पढने के बाद इनका विषय, संवाद और पात्र तथा शैलियों ने मुझे आकर्षित कर लिया। इसके बाद 'कलिकथा : वाया बाइपास' उपन्यास पढ़ने से अकलाजी के लिखने की अलगता मुझे महसूस हुई। तब मेरे मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि क्यों न मैं अलकाजी ने जो नारी जीवन प्रस्तुत किया है उस पर आधारित लघु शोध-प्रबंध बनाऊँ। इस तरह मेरे गुरूवर्य मेरे मार्गदर्शक डॉ. मोहन पुंडलिक जाधव जी से विचारविमर्श और उनके और मेरे सुझावों के साथ लघु शोध-प्रबंध के लिए ''अलका सरावगी के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन'' यह विषय चयन किया।

अलका सरावगी के उपन्यासों को पढ़ने के पश्चात या अनुसंधान करते वक्त मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उभरकर आए -

1. अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा है ?
2. क्या अलका जी के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर दिखाई देता है ?

3. क्या हो सकता है 'कलिकथा : वाया बाइपास', 'शेष कादम्बरी' और 'कोई बात नहीं' शीर्षक का अर्थ ?

4. क्या अलका जी ने अपने उपन्यासों के जरिए कोई आधुनिक बोध दिया है ?

5. विवेच्य उपन्यासों में अलका जी ने नारी के किन रूपों को चित्रित किया है ?

6. सरावगी के उपन्यासों की भाषा शैली कैसी है ?

7. समकालीन उपन्यासों में सरावगी का क्या योगदान रहा है ?

8. अलका जी इन उपन्यासों के जरिए क्या संदेश देती है ?

9. अलका जी ने नारी जीवन की किन समस्याओं का चित्रण किया है ?

10. विवेच्य उपन्यासों का शिल्प किस प्रकार रहा है ?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए। उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन विश्लेषण किया है।

लघु शोध-प्रबंध की सीमा एवं व्याप्ति :-

हर लघु शोध-प्रबंध की सीमा एवं व्याप्ति होती है। इसी के आधार पर शोध-कार्य सरलता से संपन्न हो पाता है। अध्ययन सरल एवं सुविधाजनक होने के हेतु मैंने प्रस्तुत अध्यायों को विभाजित कर लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने की कोशिश की है -

प्रथम अध्याय :- ''अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

साहित्यकार जिस वातावरण में रहता है, जो संघर्ष वह अपने जीवन में करता है, अनुभव लेता है, उसी की अभिव्यक्ति वह सर्जनशील कल्पना के द्वारा करता है। इसलिए किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के लिए उसके जीवन में आए संघर्ष का परिचय पाना आवश्यक है। इसलिए इस अध्याय में अलकाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया जाएगा। जिसमें व्यक्तित्व के अंतर्गत -

प्रस्तावना

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म, बचपन

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन

1.1.5 अन्य विषयों का अध्ययन

1.1.6 साहित्य सृजन की प्रेरणा

1.2 कृतित्व

1.2.1 कहानीकार के रूप में

1.2.2 उपन्यासकार के रूप में

1.2.3 प्रकाशन के राह पर आनेवाला साहित्य

1.2.4 अनूदित साहित्य

1.2.4.1 कलिकथा : वाया बाइपास

1.2.4.2 शेष कादम्बरी

1.2.5 पुरस्कार

1.2.6 अलका सरावगी के 'कलिकथा : वाया बाइपास' का संक्षिप्त परिचय

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय :- ''आलोच्य उपन्यासों का कथ्य''

प्रस्तावना

2.1 कथावस्तु का अर्थ

2.1.1 कथावस्तु का स्वरूप

2.1.1-1 आदि भाग (प्रारंभ)

2.1.1-2 मध्य भाग

2.1.1-3 निष्कर्ष बिंदू

2.1.1-4 समापन या अंत

2.1.2 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन

2.1.2-1 कलिकथा : वाया बाइपास

2.1.2-2 शेष कादम्बरी

2.1.2-3 कोई बात नहीं

2.1.3 आलोच्य उपन्यासों की समीक्षा

2.1.3-1 कलिकथा : वाया बाइपास

2.1.3-2 शेष कादम्बरी

2.1.3-3 कोई बात नहीं

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय :- ''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ''

प्रस्तावना

3.1 नारी जीवन की समस्याएँ

3.1.1 शोषण की समस्या

3.1.2 वेश्या समस्या

3.1.3 अकेलेपन की समस्या

3.1.4 बलात्कार की समस्या

3.1.5 नारी शिक्षा समस्या

3.1.6 विधवा समस्या

3.1.7 वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या

3.2 अन्य समस्याएँ

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय :- ''अलका सरावगी के उपन्यासों का शिल्प''

प्रस्तावना

4.1 कथ्यगत विशेषताएँ

4.2 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु

4.2.1 आरंभ

4.2.2 विकास

4.2.3 संघर्ष

4.2.4 चरमसीमा

4.2.5 अंत

4.2.6 समीक्षा

निष्कर्ष

4.3 पात्र एवं चरित्र चित्रण

4.3.1 पात्र एवं चरित्र चित्रण का महत्त्व

4.3.2 चरित्र चित्रण के भेद

4.3.3 आलोच्य उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र-चित्रण

4.3.3-1 प्रमुख पात्र

4.3.3-2 गौण पात्र

4.3.3-3 विशेषताएँ

4.4 संवाद या कथोपकथन

4.4.1 संवाद परिभाषा एवं स्वरूप

4.4.2 आलोच्य उपन्यासों में संवादों का चित्रण

निष्कर्ष

4.5 भाषा-शैली

4.5.1 भाषा का स्वरूप

4.5.2 शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप

4.5.2-1 अरबी शब्द

4.5.2-2 संस्कृत के तत्सम शब्द

4.5.2-3 अंग्रेजी शब्द

4.5.2-4 मुहावरें (रूढोक्ति)

4.5.2-5 कहावत (लोकोक्ति)

4.5.2-6 लोकगीत

4.5.2-7 सूक्ति

4.5.2-8 साहित्यिक काव्य पंक्तियों का प्रयोग

4.5.3 आलोच्य उपन्यासों में चित्रित भाषा

4.5.4 शैली का स्वरूप

4.5.4-1 वाचक शैली

4.5.4-2 विवरणात्मक शैली

4.5.4-3 आत्मकथात्मक शैली

4.5.4-4 पत्रात्मक शैली

4.5.4-5 डायरी शैली

4.5.4-6 किस्सागोई शैली

4.5.4-7 पूर्वदीप्ति शैली (फ्लैश बैक)

निष्कर्ष

पंचम अध्याय :- ''समकालीन उपन्यासों में अलका सरावगी का योगदान

प्रस्तावना

5.1 महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता

5.1.1 सामाजिक विचार

5.1.2 राजनीतिक विचार

5.1.3 धार्मिक एवं वैज्ञानिक विचार

5.2 हिंदी उपन्यासों में महिला लेखन

5.2.1 हिंदी कथासाहित्य में महिला लेखन

5.3 साठोत्तरी हिंदी उपन्यास : परिदृश्य

5.3.1 व्यक्तिवादी चिंतन

5.3.2 महानगर बोध

5.3.3 आधुनिक बोध

अ) नारी जागरण

आ) वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति

इ) आत्मनिर्वासन, अजनबीपन, अकेलापन

5.3.4 स्त्री-पुरूष संबंधों की नयी व्याख्या

5.3.5 बदलते जीवन संदर्भ

5.3.6 साहसपूर्ण महिला लेखन

5.4 अलका सरावगी का हिंदी साहित्य में स्थान

प्रस्तावना

5.4.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी-जीवन

5.4.1-1 नारी का सामाजिक जीवन

5.4.1-2 पारिवारिक जीवन

5.4.1-3 दांपत्य जीवन

5.4.1-4 स्वतंत्रता की सीमाओं को तोडनेवाली नारी

5.4.1-5 रहन-सहन

निष्कर्ष

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

-----x-----

अमूल्य साथ

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में मुझे जिनसे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अमूल्य सहयोग मिला, जिन्होंने मुझे यथासमय आगे बढने के लिए प्रोत्साहित किया, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना केवल औपचारिकता न समझकर अपना कर्तव्य समझती हूँ।

सर्व प्रथम उन सभी लेखक-लेखिकाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी रचनाओं का प्रयोग मैंने संदर्भ ग्रंथ के रूप में किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशक आदरणीय प्रा. डॉ. जाधव मोहन पुंडलिक जी (छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा) के आत्मीय सहयोग, प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा अमूल्य निर्देशन का फल है। आपका आदर्श, सुस्वभावी, शांत, समंजस व्यक्तित्व मुझे हमेशा प्रोत्साहित करता रहा। हर कठिनाइयों में हमेशा आपने मुझे मार्ग दिखाया है। मैं आपके प्रति ऋण शब्दों में प्रकट करने की अपेक्षा आजीवन आपकी छत्रछाया में रहना पसंद करूँगी। ऐसा ही मार्गदशन स्नेह, प्रेरणा हमेशा बना रहे यही कामना करती हूँ। और मैं एक काव्यपंक्तियों से आपकी महत्ता को व्यक्त करना चाहूँगी-

"कंटीले इस जग-वृक्ष पर सुंदर दो ही डार।
अनुशीलन साहित्य का गुणीजनों का प्यार।।"

मेरी दृष्टि में गुरूजन ही गुणीजन होते हैं और यह मेरा सद्भाग्य रहा है कि मुझे सदैव ही गुरूजनों का प्यार मिला। साथ ही डॉ. सगरे बी. डी., लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा इन्होंने भी समय-समय पर मार्गदर्शन किया। अत: उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इसके बावजूद जिन गुरूजनों का अबतक के शैक्षिक जीवन में प्यार, स्नेह एवं प्रेरणा मिली उसमें प्रा. डॉ. निकम शिवाजीराव, प्रा. कसबे दिलीपकुमार, प्रा. इंगोले राजेंद्र, प्रा.जाधव सचिन, डॉ. सौ. पाटील शैलजा, प्रा. सौ. परांजपे, प्रा. श्री. रक्ताडे एस्. डी., प्रा. ढवळे, आदि का मार्गदर्शन मिलता रहा। ग्रंथालय के श्री. पोरे सर, श्री. पाटील संदीप आदि का भी सहयोग मिलता रहा। अत: उनके प्रति मैं आजन्म कृतज्ञ रहूँगी।

मेरे परिवार के अतुल्य मेरे पिताजी और माँ, भैय्या-भाभी इनका खूब सहयोग मिला। उनका स्नेह, वात्सल्य, विश्वास मुझे हमेशा चेतना और उत्साह देता रहा। इन्हीं के साथ मेरे पति ने

ने भी मुझे हर वक्त हौसला देकर मुझे हमेशा प्रेरित किया है। आप जैसे परिवार के लोगों के ऋण शब्दों में नहीं उतारे जा सकते। तो मैं इनके प्रति आजन्म ऋणी रहना स्वीकार करूँगी। साथ ही देवर, बहन, जीजाजी, पिंकी, ससुरजी आदि के प्रति मैं हमेशा ऋणी रहूँगी।

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरे अत्यंत नजदिकी 'The mind group' के सभी दोस्त और सहेलियाँ पूनम, सुषमा, अजिता, सुजाता, दीपक, सौ. काटे, हेमलता आदि का इस लघु शोध-प्रबंध में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: मैं इन सबकी ऋणी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक सामग्री संकलन मुझे केशवराव पवार ग्रंथालय कराड, बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर, सद्गुरू गाडगे महाराज कॉलेज कराड, वेणुताई चव्हाण कॉलेज कराड से प्राप्त हुई। इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल और सभी कर्मचारियों के प्रति दिल से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इस प्रबंध के संगणक टंकन अत्यंत सुचारू रूप से करनेवाले मे. रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवले और श्री. कुलकर्णी ने अत्यंत तत्परता के साथ करके शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है। अत: मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

साथ ही जिन ज्ञात अज्ञात तथा परिचित-अपरिचितों की शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन मुझे प्राप्त हुए है उन सबके प्रति मैं आत्मीयतापूर्ण भाव से कृतज्ञता प्रकट करते हुए लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

(सुश्री. देसाई आशादेवी विलासराव)

स्थान : सातारा

तिथि : 25 फरवरी 2009

विषय-सूची

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
	प्रमाणपत्र	**(एक)**
	अनुशंसा	**(दो)**
	प्रख्यापन	**(तीन)**
	प्राक्कथन	**(चार)**
	अमूल्य साथ	**(ग्याहर)**
	विषय सूची	**(तेरह)**
प्रथम अध्याय :-	**''अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''**	**1 - 7**
	प्रस्तावना	
	1.1 व्यक्तित्व	
	1.1.1 जन्म, बचपन	
	1.1.2 माता-पिता	
	1.1.3 शिक्षा	
	1.1.4 पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन	
	1.1.5 अन्य विषयों का अध्ययन	
	1.1.6 साहित्य सृजन की प्रेरणा	
	1.2 कृतित्व	
	1.2.1 कहानीकार के रूप में	
	1.2.2 उपन्यासकार के रूप में	
	1.2.3 प्रकाशन के राह पर आनेवाला साहित्य	
	1.2.4 अनूदित साहित्य	
	1.2.4-1 कलिकथा : वाया बाइपास	
	1.2.4-2 शेष कादम्बरी	
	1.2.5 पुरस्कार	
	1.2.6 अलका सरावगी के 'कलिकथा : वाया बाइपास' का संक्षिप्त परिचय	
	निष्कर्ष	
द्वितीय अध्याय :-	**''आलोच्य उपन्यासों का कथ्य''**	**9 - 24**
	प्रस्तावना	
	2.1 कथावस्तु का अर्थ	
	2.1.1 कथावस्तु का स्वरूप	

2.1.1-1 आदि भाग (प्रारंभ)
2.1.1-2 मध्य भाग
2.1.1-3 निष्कर्ष बिंदू
2.1.1-4 समापन या अंत
2.1.2 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन
2.1.2-1 कलिकथा : वाया बाइपास
2.1.2-2 शेष कादम्बरी
2.1.2-3 कोई बात नहीं
2.1.3 आलोच्य उपन्यासों की समीक्षा
2.1.3-1 कलिकथा : वाया बाइपास
2.1.3-2 शेष कादम्बरी
2.1.3-3 कोई बात नहीं
निष्कर्ष
तृतीय अध्याय :- ''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ'' 25 - 43
प्रस्तावना
3.1 नारी जीवन की समस्याएँ
3.1.1 शोषण की समस्या
3.1.2 वेश्या समस्या
3.1.3 अकेलेपन की समस्या
3.1.4 बलात्कार की समस्या
3.1.5 नारी शिक्षा समस्या
3.1.6 विधवा समस्या
3.1.7 वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या
3.2 अन्य समस्याएँ
निष्कर्ष
चतुर्थ अध्याय :- ''अलका सरावगी के उपन्यासों का शिल्प'' 45 - 84
प्रस्तावना
4.1 कथ्यगत विशेषताएँ
4.2 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु
4.2.1 आरंभ
4.2.2 विकास
4.2.3 संघर्ष

4.2.4 चरमसीमा
4.2.5 अंत
4.2.6 समीक्षा
निष्कर्ष

4.3 पात्र एवं चरित्र चित्रण

4.3.1 पात्र एवं चरित्र चित्रण का महत्त्व
4.3.2 चरित्र चित्रण के भेद
4.3.3 आलोच्य उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र-चित्रण
4.3.3-1 प्रमुख पात्र
4.3.3-2 गौण पात्र
4.3.3-3 विशेषताएँ

4.4 संवाद या कथोपकथन

4.4.1 संवाद परिभाषा एवं स्वरूप
4.4.2 आलोच्य उपन्यासों में संवादों का चित्रण
निष्कर्ष

4.5 भाषा-शैली

4.5.1 भाषा का स्वरूप
4.5.2 शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप
4.5.2-1 अरबी शब्द
4.5.2-2 संस्कृत के तत्सम शब्द
4.5.2-3 अंग्रेजी शब्द
4.5.2-4 मुहावरें (रूढोक्ति)
4.5.2-5 कहावत (लोकोक्ति)
4.5.2-6 लोकगीत
4.5.2-7 सूक्ति
4.5.2-8 साहित्यिक काव्य पंक्तियों का प्रयोग
4.5.4 आलोच्य उपन्यासों में चित्रित भाषा
4.5.4 शैली का स्वरूप
4.5.4-1 वाचक शैली
4.5.4-2 विवरणात्मक शैली
4.5.4-3 आत्मकथात्मक शैली
4.5.4-4 पत्रात्मक शैली
4.5.4-5 डायरी शैली

4.5.4-6 किस्सागोई शैली
4.5.4-7 पूर्वदीप्ति शैली (फ्लैश बैक)
निष्कर्ष
पंचम अध्याय :- ''समकालीन उपन्यासों में अलका सरावगी का योगदान 85-109
प्रस्तावना
5.1 महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता
5.1.1 सामाजिक विचार
5.1.2 राजनीतिक विचार
5.1.3 धार्मिक एवं वैज्ञानिक विचार
5.2 हिंदी उपन्यासों में महिला लेखन
5.2.1 हिंदी कथासाहित्य में महिला लेखन
5.3 साठोत्तरी हिंदी उपन्यास : परिदृश्य
5.3.1 व्यक्तिवादी चिंतन
5.3.2 महानगर बोध
5.3.3 आधुनिक बोध
अ) नारी जागरण
आ) वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति
इ) आत्मनिर्वासन, अजनबीपन, अकेलापन
5.3.4 स्त्री-पुरूष संबंधों की नयी व्याख्या
5.3.5 बदलते जीवन संदर्भ
5.3.6 साहसपूर्ण महिला लेखन
5.4 अलका सरावगी का हिंदी साहित्य में स्थान
प्रस्तावना
5.4.1 अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी-जीवन
5.4.1-1 नारी का सामाजिक जीवन
5.4.1-2 पारिवारिक जीवन
5.4.1-3 दांपत्य जीवन
5.4.1-4 स्वतंत्रता की सीमाओं को तोडनेवाली नारी
5.4.1-5 रहन-सहन
निष्कर्ष
उपसंहार 111-116
संदर्भ ग्रंथ सूची 117-120